अनुपमा शर्मा

रुड़की, हरिद्वार

जयपुर की यात्रा

यूं तो अपने जीवन में मैंने अनेक राज्यों की यात्रा की है, राजस्थान भी कई बार जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ परंतु कुछ तो विशेष है वहां की माटी में, जो मुझे बार–बार अपनी ओर खींचती है ।इस बार जब घर में जयपुर चलने का प्रोग्राम बना तो तय हुआ कि चौकी ढाणी चला जाए ।इस जगह के बारे में काफी कुछ सुना था, परंतु कभी जाना नहीं हो पाया ।यह सुनकर मन खुशी से उछलने लगा। एक तो मेरा प्यारा रंगीला राजस्थान और फिर चौकी ढाणी की सैर ।मतलब एक ही स्थान पर पूरी राजस्थान संस्कृति की झलक ।अब इंतजार मुश्किल हो रहा था। तीन दिन इंतजार के बाद आखिरकार चलने वाली सुबह भी आ ही गई और हम सब यानी मै ,पतिदेव, बेटा और बेटी ।सभी अपने–अपने सूटकेस गाड़ी में रखकर जयपुर की ओर निकल पड़े। इसके लिए हमने दिल्ली होकर जाने वाले मार्ग को चुना। दिल्ली जयपुर राजमार्ग बहुत ही खूबसूरत है, जिसने यात्रा के आनंद को कहीं गुना बढ़ा दिया। शाम के 4:00 बजते बजते हम जयपुर में कदम रख चुके थे और हम पहुंच गए ऑफीसर्स गेस्ट हाउस, जो मेरे पति ने पहले से ही बुक करवा लिया था। वहां जाकर थोड़ा सुस्ताने के बाद आसपास के क्षेत्र का कुछ मुआयना किया, और क्योंकि सब थके हुए थे तो जल्दी ही सबको नींद ने अपनी आगोश में ले लिया ।

अगले दिन सुबह सब जल्दी 5:00 बजे ही उठ गए और थोड़ी मॉर्निंग वॉक करके, नाश्ता करने के बाद निकल पड़े खरीदारी करने ,यानी बापू बाजार और जोहरी बाजार ।यह दोनों बाजार हवा महल से बिल्कुल सटे हुए हैं ।हवा महल का निर्माण 1799 में राजपूत राजा महाराजा सवाई प्रताप सिंह ने करवाया था। इसे वास्तुकार लालचंद उस्ता ने कृष्ण जी के मुकुट के आकार में डिजाइन किया था ।सड़क के दोनों ओर सजी हुई जयपुरी सामान की दुकानें बरबस ही ध्यान खींच रही थी ।कहीं रंग बिरंगी लहरिया और बांधनी स्कर्ट ,कहीं साड़ियां, कहीं जूतियां और चूड़ियां दुकानों की शोभा बढ़ा रही थी और आवाज सी लगाती लग रही थी ।वहां से स्कर्ट और साड़ियां खरीदने के बाद अब जोरों की भूख लग गई थी। तभी सामने राम जी भाई की दुकान पर जयपुर की मशहूर प्याज की कचौड़ी और लस्सी दिखाई दी, फिर क्या था, पसीना पोंछते हुए हम जा पहुंचे रामजी भाई की दुकान पर ,और पेट पूजा करके चल दिए वापस गेस्ट हाउस ।

अब शाम का प्रोग्राम था चौकी ढाणी जाने का ।वहां समय शाम 5:00 बजे से रात 11:00 बजे तक होता है। अतः हम सब तैयार होकर 5:00 बजे निकल गए। टिकट हमने ऑनलाइन बुक करवा लिए थे ,जैसे ही हम लोग गाड़ी में बैठने लगे तभी जयपुर के आसमान पर बादल अठखेलियां करने लगे और छोटी–छोटी बूंदें गिरने लगी ।जब तक हम चौकी धानी पहुंचे बूंदों का रूप धुआंधार बारिश ने ले लिया। मुख्य द्वार से अंदर दालान तक लगभग 100 मी का फासला था। पहले हम सोचते रहे कि क्या किया जाए ,फिर हिम्मत करके

सबने कपड़े ऊपर समेटे और सिर पर हाथ रखकर दौड़ लगाई अंदर के लिए, और हम पहुंच गए मेरे सपनों के गांव ।वहां राजस्थानी ड्रेस में सजी दो लड़कियां हमारा इंतजार कर रही थी ,उन्होंने तिलक लगाकर हम सबका स्वागत किया ।थोड़ी देर दालान में बैठकर बारिश हल्की होने के इंतजार के साथ–साथ कुछ फोटोग्राफी भी कर ली गई। जैसे ही बारिश हल्की हुई हम अंदर की ओर चल दिए ।अंदर राजस्थानी संस्कृति को समेटे हुए पूरा का पूरा गांव था ।अंदर चारों ओर दूर–दूर तक पानी ही पानी फैला हुआ था ,लेकिन उत्साह में फिर भी कोई कमी नहीं थी। अब चप्पल उतार कर हाथ में ले ली गई और पानी में चलने का आनंद भी साथ हो लिया।हर ओर अद्भुत नजारा था ।कहीं चारपाई और मूढ़े लगे हुए थे, कहीं कुम्हार चाक पर बर्तन बना रहा था ,और कहीं पारंपरिक कालबेलिया नृत्य हो रहा था और एक तरफ ऊंट गाड़ी भी दिखाई दी ।और तो और खरीदारी के लिए बाजार भी था जिसमें राजस्थानी वस्तुएं मिल रही थी। एक और चाय की ठेकरी भी लगी हुई थी जिसमें मिट्टी के गिलास में चाय मिल रही थी ।मिट्टी की खुशबू चाय के स्वाद को दोगुना कर रही थी । कुम्हार के पास बैठकर हाथ से मिट्टी को छूने का आनंद ही अलग था ।वहां लगी हुई छोटी–छोटी दुकानों का मुआयना करते–करते लगभग 1 घंटा हो चुका था ,अब बारी थी भोजन करने की ।भोजन के लिए एक अलग हॉल नुमा कमरा बनाया गया था जिसकी दीवारें मिट्टी की थी और उन पर ठेठ राजस्थानी स्टाइल में आलेखन बनाए गए थे ।एक कोने में चक्की भी रखी थी ।भोजन की व्यवस्था जमीन पर बैठकर चौकी पर थाली रखकर खाने की थी ।अनेक प्रकार के राजस्थानी व्यंजन थाली में परोसे जा रहे थे। एक के बाद एक लगभग 25 व्यंजन परोसे गए ,इसमें सांगरी की सब्जी , कढ़ी,बाजरे की खिचड़ी ,मालपुए और न जाने क्या–क्या। खाने से अधिक महत्वपूर्ण खिलाना रहा ।बहुत प्यार और मनुहार के साथ भोजन परोसा गया जिससे पेट के साथ मन भी तृप्त हो गया ।अब रात के 10:00 बज चुके थे, बारिश भी थम चुकी थी और मौसम एक ताजगी और ठंडक का एहसास दे रहा था ।अब हम फिर गाड़ी में बैठकर गुलाबी रास्तों से गुजरते हुए गेस्ट हाउस की तरफ चल पड़े। बंद पड़े बाजार ऐसे शांत लग रहे थे जैसे कोई सन्यासी समाधि लगाए बैठा हो ,दिन का कोलाहल भी शायद थक कर सो गया था। एक मुलाकात हवा महल से करते हुए हम लगभग 11:00 बजे अपने गंतव्य पर पहुंच गए और थके होने के कारण सब जल्दी ही सो गए क्योंकि अगले दिन फिर सुबह पूरे दिन का सफर करना था ।

अगले दिन सुबह लगभग 10:00 बजे हमने जयपुर से विदा ली इस वादे के साथ कि फिर से मुलाकात होगी